"ख्याल गायन शैली के परिप्रेक्ष्य में तबले की संगत का क्रियात्मक तथा सैद्धान्तिक अध्ययन"

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) आगरा से संगीत में पीएच०डी० की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2014

शोध निर्देशिका

डॉ० (श्रीमती) सुधा सहगल
एसो०प्रो० संगीत–विभाग,

शोधकर्त्री

नीतू कुमारी
पीएच०डी०(तबला वादन)

विभागाध्यक्ष

प्रो० (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सत्संगी
संगीत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख

प्रो० (श्रीमती) उर्मिला आनंद
संस्कृत विभाग कला संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग आगरा–5

"ख्याल गायन शैली के परिप्रेक्ष्य में तबले की संगत का क्रियात्मक तथा सैद्धान्तिक अध्ययन"

भूमिका

ख्याल गायन शैली उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक सुव्यवस्थित, प्रतिष्ठित तथा बेजोड़ शैली है। ख्याल का प्रचलन शास्त्रीय या अभिजात संगीत में अठारहवीं शताब्दी में हुआ है। ख्याल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों के मतभेद हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार ख्याल का प्रवर्तन तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो द्वारा माना गया है। अठारहवीं शताब्दी में ध्रुपद से टूटकर विशेष परिस्थितियों में ख्याल एक नई नवीन विधा के रूप में विकसित एवं प्रचलित हुआ।

कहा जाता है कि 15 वीं शताब्दी में जौनपुर के नवाब सुल्तान हुसैन शर्की ने ख्याल को परिचायक स्वरूप प्रदान किया। 18वीं शताब्दी में यह अत्यधिक लोकप्रिय हुआ जिस समय मुहम्मद शाह का शासन काल था। उस काल में सदारंग और अदारंग ने इस शैली में सैकड़ों बंदिशों की रचना की। वास्तव में ख्याल गायकी के प्रचार का श्रेय सदारंग और अदारंग को ही है।

वर्तमान एवं 20वीं शताब्दी में ख्याल का विकास घरानों द्वारा हुआ तथा उत्तर भारत में अनेक घरानों के सांगीतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ख्याल की शैलियाँ बहुआयामी हो गईं। प्राचीन घरानों में ग्वालियर घराना, आगरा घराना, पटियाला घराना, किराना घराना, दिल्ली घराना आदि सुप्रसिद्ध हैं। इन सभी घरानों की गायकी की विशेषतायें भी भिन्न–भिन्न दृष्टव्य होती हैं जैसेः–

- ❖ **ग्वालियर घराने** में अष्टांग गायकी का महत्व है, बुलन्दी, लय व तान के लिए गमक व जबड़ों की तानों का प्रयोग, सीधे पल्लेदार एवं दानेदार तानें इस घराने की प्रमुख विशेषतायें हैं।
- ❖ **आगरा घराने** में नोम्–तोम् के आलाप करने का अनोखा ढंग, खुली व जोरदार आवाज का प्रयोग, लयकारी के साथ ही बोल अंग का विस्तार और बोलों के साथ पल्टी की बढ़न्त करना व ताल के विभिन्न खण्डों से तान की उपज शुरू करना इस घराने की विशेषतायें है।
- ❖ **पटियाला घराने** में आवाज की कोमलता का प्रभाव गमक अंग की गायकी अति द्रुत लय में संचार करने वाली सपाट तानों का प्रयोग, और तानों की बंदिश तानों के अनुसार अलग–अलग होती है।
- ❖ **किराना घराने** में स्वरों का सुरीलापन और चैनदारी के साथ गायन, लोच व मीड़ का अधिक प्रयोग, गायन प्रस्तुत के समय शनैः शनैः एक–एक स्वर को आगे बढ़ाने की प्रथा प्रयोग मे प्रचलित है।

- **दिल्ली घराने** में विलम्बित लय की चीजों में सूत, मीड़, गमक व लहक का विशेष प्रयोग तानें कठिन, जटिल व पेंचबल वाली, मध्यलय में स्वरों का आपसी लड़गुथाव व जोड़–तोड़ का काम इस घराने की प्रमुख विशेषतायें हैं।

उपर्युक्त ख्याल को समृद्ध शैली की भाँति स्थापित करती है तथा गायन शैली की विशेषताओं के साथ–साथ ताल वैचित्र्य, ताल वैविध्य तथा ताल प्रयुक्तिकरण समान होते हुये भी पृथक–पृथक दृष्टिगोचर होता है। इन तालप्रधान विशेषताओं के पार्श्व में संगत का वैशिष्ट्य होना है।

तबला वाद्य की सुसंगतिः

तबला वाद्य/ताल का प्रयोग ख्याल के साथ तबले का सहायक रूप में विद्यमान होना सुसंगत कहलाता है। गायन, वादन अथवा नृत्य को जब अधिकाधिक प्रभावशाली तथा मनमोहक बनाने के लिए विभिन्न वाद्यों अथवा गायन द्वारा सहयोग दिया जाता है तो इस कार्य को संगत की संज्ञा दी जाती है। संगति का न्यायसंगत सम्बन्ध गायन, वादन तथा नृत्य के साथ विशिष्ट विधाप्रधान सम्बल के रूप में एवं चमत्कार पूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से दृष्टिगोचर होता है।

भारतीय संगीत में ध्रुवपद, धमार, ख्याल, तराना, टप्पा, ठुमरी, भजन, गीत, गजल, कव्वाली तथा लोकगीत इत्यादि गान विधाऐं प्रचलित हैं। इनमें से कुछ विधायें शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा सुगम संगीत के अन्तर्गत आती हैं। इन विभिन्न प्रकार की विधाओं के साथ उनके अनुकूल तबला वादन की संगति भी विविध प्रकार से की जाती है। जैसे ध्रुवपद, धमार, ख्याल, तराना, ठुमरी, टप्पा आदि के साथ विधानुसार तबला वाद्य की संगति की जाती है। वैसे तो तबला वादक किस घराने से सम्बन्धित हो इसका गायन विधा के साथ या किसी घराने विशेष के साथ कोई प्रतिबन्ध नहीं है। यह तबला वादक की सूझ बूझ पर निर्भर करता है कि गायक या वादक के साथ किस तरह का वादन करे कि गायक अथवा वादक को सूझबूझ तथा विद्वतापूर्ण सहयोग मिले, तथा अपेक्षित रस की भावानुकूल अवधारणा हो सके। वस्तुतः कलाकार तबले पर जो भी वादन करते हैं भले ही वह स्वतन्त्र हो या संगत प्रधान वह निबद्ध संगीत एवं ताल युक्त होता है। निष्चित मात्राओं का आवर्तन जिसमें विभाग तथा खाली, भरी निर्धारित रूप से बजाया जाए वह ताल का मूल ढांचा या ठेका कहलाता है। संगीत के नियमों अथवा सिद्धान्तों की चर्चा भरत आदि महान विद्वानों ने भी प्रतिपादन किया है जो तत्व, अनुगत और ओघ है, यही सिद्धान्त आज भी व्यवहार में है, अन्तर केवल शब्दावली का है। सुप्रसिद्ध सितार वादक निखिल घोष ने दो प्रकार की संगति का उल्लेख किया है। (1) लिपटना तथा (2) सवाज जवाब। "जब तबला वादक या गायक के साथ–साथ संगति युक्त होता है उसे लिपटना कहते हैं।" इस तरह की संगति तबला वादक की सूझबूझ पर निर्भर करती है क्योंकि इसमें बँधे हुये बोल नहीं बजते अपितु जिस तरह गायक या वादक अतीत अनाघात ग्रहों का प्रयोग करते हुये करते हैं उसी के अनुरूप संगतकार भी संगति करता है। सवाल जवाब की संगति

गायक या तन्त्रकार की तान, अथवा तीहे को सुनकर तबला संगतिकार उसी वजन का टुकड़ा या तीहा जवाब में दोहराता है।

गायक वादन के साथ जब तबला कलाकार संगत प्रारम्भ करता है तो वही लय निष्चित संख्या के आवर्तन को आधार संगति प्रारम्भ करता है। यह संगति नियमितता के रूप में प्रारम्भ होती है जिसके दो घटक तत्व हैं, लय तथा ताल। द्रुत मध्य या विलम्बित गति की परिणति लय मानी जाती है। तथा मात्राओं की निश्चित संख्या विभाग और बोल की परिणति ताल को कहा जाता है।

ख्याल गायन एवं संगतः—

शोध के मुख्य बिन्दु को समक्ष रखते हुये यह कहना अत्यन्त उचित प्रतीत होता है कि ख्याल गायन एवं तबला संगत का दुग्ध—नीरवत् सम्बन्ध है। ख्याल जहाँ एक ओर प्रबुद्ध संगत के कारण अत्यन्त सफल हो जाता है वहीं दूसरी ओर अपरिपक्व संगत के कारण असफल भी हो जाता है। ख्याल गायन तथा तबला संगत दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। संगत ख्याल को एक सम्बल प्रदान करती है। विलम्बित ख्याल में जहाँ एक ओर संगत धीमी लय में प्रतिपादन होती है वहीं दूसरी प्रत्येक मात्रा के उपविभागों में छोटे—छोटे बोलों का काम ठेके के पूरे ढांचे को सौन्दर्य पूर्ण बना देता है। विलम्बित ख्याल के पष्चात् द्रुत ख्याल आरम्भ होने के साथ ही संगतिकार ताल और सम को देखकर छोटा टुकड़ा या मुहरा बजाकर ठेका पकड़ता है और कभी—कभी तबला संगतिकार सीधा ठेका पकड़ता है, तथा स्थाई, अन्तरा के पष्चात् बीच में जगह मिलने पर या गायक के इशारे पर या गायक द्वारा सांस लेने के बीच में जो जगह मिलती है दो तीन आवर्तन का टुकड़ा अथवा तिहाई बजाकर पुनः ठेका पकड़ा जाता है।

यदि तबला वादन लड़न्त का मिजाज रखता है तो लड़न्त करते हुये दोनों कलाकार 'सम' पर आकर तीन—चार मात्रा शान्त होकर गायक अपनी बंदिश पकड़ता है तथा तबला संगतिकार ठेका पकड़ता है। ऐसे तबला संगत एवं ख्याल गायन चमत्कारिक और प्रभावशाली हो जाता है। वैसे तो तबला वादक अपने एकल वादन में अपनी चमत्कार पूर्ण कलात्मकता, बोलों की तैयारी तथा क्लिष्ट परन, रेलों के द्वारा मनवा लेता है। वही संगत में तबला वादक की सूझबूझ, ख्याल के साहित्य के साथ बुद्धिमत्ताप्रधान तथा अनुपात पूर्ण वादन अपनी विशिष्ट छाप छोड़ता है।

ख्याल गायन एवं तबला संगत के सम्बन्ध में उपर्युक्त विभिन्न विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्री द्वारा यह सोचा गया कि इतनी विशेषताओं के होते हुये भी संगीत का क्रियात्मक रूप किसी भी प्रकार से दोनों पहलुओं को एक साथ समक्ष नहीं लाता है। ख्याल गायन के विषय में तो अनेकों ग्रन्थ, पुस्तकें, शोधअंक, शोधपत्र, लिखे जा चुके हैं। इसी प्रकार तबला विषय पर भी अनगिनत ग्रन्थों एवं पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है, किन्तु आष्चर्य है कि 'ख्याल गायन एवं तबला संगत' इन दोनों पक्षों को लेकर किसी भी साहित्य का प्रकाशन नहीं हुआ है। **"सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण"** से ज्ञात होता है कि

ख्याल गायन एवं तबला वादन के संदर्भ में पृथक–पृथक विभिन्न शोध प्रबन्ध, पुस्तकें, शोध प्रपत्र उपलब्ध हैं जैसेः–

शोध प्रबन्ध/शोध पत्र/पुस्तकें लेखक वर्ष

ख्याल गायन के सन्दर्भ में सम्बन्धित साहित्यः

शोध प्रबन्ध

1. ख्याल गायन में आगरा घराने की परम्परा(कुरूक्षेत्र विष्वविद्यालय)	सिंह, अमरिक	1995
2. उत्तर भारतीय संगीत में घराने मे गायकी का महत्व(कुरूक्षेत्र विष्वविद्यालय)	डॉ. वालिया, अमृत	1992
3. ख्याल गायन शैली मे घरानों की परम्परा एक अध्ययन (हिमाचल विश्वविद्यालय)	गुलाटी, संगीता	1998
4. ख्याल गायन बंदिश का स्वरूप एवम् महत्व (हिमाचल विष्वविद्यालय)	शर्मा, सुरेश	1990
5. उत्तर भारतीय ख्याल गायन पद्धति एवम् वर्तमान शिक्षा प्रणाली (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय)	श्रीखण्डे, सुरेश गोपाल	1989
6. Evaluation of Ragas through their Distinctive treatment of different Khyaal gharaanas (Delhi University)	डॉ. बैनर्जी, शरबरी	1997
7. Origins and evolution in Musical compositions (Khyaal) with ref. to regional forms (Delhi Univeristy)	डॉ. चक्रवर्ती, कृष्णा	1965
8. Development of Hindustani Classical Music during 19th and 20th C. (Delhi Univeristy)	डॉ. सोनी, रमा	1984

शोध पत्र

1. Khyaal Tradition of Rajasthan	Singh, Ranveer	2000
2. Khyaal: its origin and development	Roy, Bimal	
3. ख्याल गायन शैली	कुलकर्णी, डॉ. सौ. वर्षा	जून, 2010
4. ख्याल का विकास	सिंह, डॉ. जयदेव	अक्टूबर, 1988
5. ख्याल गायन शैली में बोलों की भूमिका	हलदणकर, श्री ववन राव	दिसम्बर, 1999
6. ख्याल गायन शैली एक विचारणीय प्रष्न,	शर्मा, डॉ. जयचन्द्र	मार्च, 1990

पुस्तकें

1. संगीत मीमांसा, पुरी, डॉ. मृदुला, सत्यम पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2007

2. संगीत चिन्तामणि, बृहस्पति, आचार्य, संगीत कार्यालय, हाथरस,उ0प्र0 2001

3. मध्य प्रदेश में शास्त्रीय,खण्डे, डॉ. कलाश्रीनिर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली 1995
संगीतकी विकास यात्रा

4. हिन्दुस्तानी संगीत के महान,गोस्वामी, शैलेन्द्र कुमार, कनिष्का पब्लिशर्स 2001
रचनाकार,सदारंग–अदारंग, डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली

तबला वाद्य के संदर्भ में सम्बन्धित साहित्यः

(1) शोध प्रबन्ध

1. तबला शिक्षण के माध्यम के रूप में
कैसेट श्रव्य उपकरण तैयार करना भट्ट,डॉ. नलिन सुन्दरम् 1997
(डी0ई0आई0 डीम्ड विष्वविद्यालय)

2. तबला वादन की शिक्षण पद्धति
(एक विवेचनात्मक अध्ययन) शर्मा, डॉ. नीलू 1996
(डी0ई0आई0 डीम्ड विष्वविद्यालय)

3. इण्टरनेट के माध्यम से तबला शिक्षण की शर्मा, अर्चना 2013
सम्भावनाऐं
(डी0ई0आई0 डीम्ड विष्वविद्यालय)

4. तबले के बनारस घराने की रचनाओं का त्रिपाठी,डॉ शिवेन्द्र प्रताप 2009
विष्लेषणात्मक अध्ययन
(बनारस विष्वविद्यालय)

शोध पत्र

1. तबला वादन में निहित सौन्दर्य माईणकर, प. सुधीर मार्च, 2009

2. भारतीय संगीत में तबले का स्थान ताड़े, प्रो. गजानन जनवरी, 1974

3. ताल वाद्यों में मुखड़ा नहीं मोहरा
एक विचार श्रीवास्तव, आचार्य गिरिश चन्द्र फरवरी, 2008

4. तबला संगत के आदर्श लेखक मिश्र, प. ईष्वर लाल अगस्त, 2013

5. तबला वादन में प्रयुक्त मुखड़े का
समीक्षात्मक विवेचन कुमार, डॉ. ऋषितोष जून, 2006

पुस्तकें

1. अवनद्य वाद्य सिद्धान्त एवं वादन, बम्बन, डॉ. महेन्द्र प्रसाद अभिषेक पब्लिकेशन, 2008 परम्परा
चण्डीगढ़

2. तबले का उद्‍गम, विकास और, शुक्ल, डॉ. योगमाया हिन्दी माध्यम, 1987

वादन शैलियाँ		कार्यान्वन, निदेशालय, दिल्ली		
3. पखावज और तबले के घराने एवं,	मिस्त्री, डॉ. आबान ई.	प0 के0की0एस0, जिजिना स्वरसाधना समिति, मुम्बई	2000	परम्परायें
4. भरतीय तालों का शास्त्रीय, विवेचन	सेन, डॉ. अरूण कुमार	मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी	2005	

उपरोक्त शोध प्रबन्ध पुस्तकों, शोध पत्रों में ख्याल एवं तबला वाद्य विषयक जानकारी तो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है किन्तु आष्चर्य का विषय है कि ख्याल गायन एवं तबला–संगति के संदर्भ में कोई शोध प्रबन्ध, पुस्तकें तथा शोध प्रपत्रों का नितान्त अभाव है। जो सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध है, वह इतना नगण्य एवं सार्थक नहीं है जो प्रस्तावित शोध प्रबन्ध हेतु लाभप्रद हो सके। एक शोध प्रबन्ध **"उत्तर एवम् दक्षिण" भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में अवनद्य वाद्यों का प्रस्तुतिकरण 'एक अध्ययन'** बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी द्वारा पूर्ण किया गया है किन्तु शोध प्रबन्ध में भी तबला वाद्य को आंशिक रूप में वर्णित किया गया है। इसके अतिरिक्त दो शोध प्रपत्रों में तबला संगत का उल्लेख किया गया है–

1. वर्तमान परिपेक्ष्य में भारतीय संगीत में ताल स्वरूप एवं प्रयोग –जौहरी, डॉ. रीमा 2011
2. तबला वादन की शिक्षण पद्धति (एक विवेचनात्मक अध्ययन) –शर्मा, डॉ. नीलू 1996

इन शोध प्रपत्रों में भी प्रस्तावित शोध कार्य के सम्बन्ध में न्याय संगत पर्याप्त सामग्री का नितान्त अभाव है।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध को **'ख्याल गायन एवं तबला संगति'** इन दोनों पक्षों के सामंजस्यात्मक रूप में तथा इनमें प्रस्तावित शोध निर्वाहित होने वाले विशिष्ट तत्वों के क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक स्वरूपों को खोजने, निरीक्षण करने तथा विभिन्न परम्पराओं को उजागर करने की दृष्टि से चयनित किया गया है–

विषय कथन :–"ख्याल गायन शैली के परिप्रेक्ष्य में तबले की संगत का क्रियात्मक तथा सैद्धान्तिक अध्ययन"

समस्या प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः–

1. **ख्यालः–**एक विशेष गान पद्धति, ख्याल विचार

–मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश – सूर्य नारायण उपाध्याय

- ध्यान, स्मरण, चिन्ता, विचार, एक शास्त्रीय रोग, खेल ढंग

–ब्रज भाषा शब्द कोश – डॉ. सुधीर कुमार

- ❖ ध्यान, मनोवृत्ति, विचार, भाव, आदर, सम्मति, एक प्रकार का गान, याद, स्मृति ख्याल
  —भाषा शब्द कोश — डॉ. राम शरण शुक्ल रसाल

- ❖ एक प्रकार की गायन शैली
  —संगीतार्णव संगीत कोश — डॉ. सुनन्दा पाठक

2. **संगतः**—युक्त, मिला हुआ, एकत्रीभूत, संयोग लग्न, मौजू, तर्क संगत, वाणी, आसक्ति, गाने आदि के साथ बाजा बजाना।

—मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश — सूर्य नारायण उपाध्याय।

(1) 'मिलन'
(2) कंठव्य या वाद्य यंत्र संगीत के साथ आनद्ध वाद्य पर ताल और छेद निर्देशक वादन को संगत कहा जाता है।

—भारतीय संगीत कोश — विमला कान्त राय चौधरी

- ❖ संगसामञ्जस्य, व्यवस्था, सहभाव, सम्पर्क
  —तुलसी शब्द कोश — आचार्य बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान'

3. **तबलाः**—प्रमुख ताल वाद्य जिसे दाहिने हाथ से बजाया है उसे तबला अथवा दायां कहा गया है, ऐसी मान्यता है कि हजरत अमीर खुसरो ने इस वाद्य यंत्र का अविष्कार किया।
   —संगीत भाष्य — श्री पद बन्धोपाध्याय

- ❖ चमड़े से मढ़ा एक बाजा, खनकना, ठनकना, तबला बजाना, नाचरंग, गाना बजाना।
  —मानक विशाल हिन्दी कोश — सूर्य नारायण उपाध्याय

- ❖ अवनद्ध वाद्य, प्रचलित संगीत में संगति करने वाला एक मात्र मुख्य ताल वाद्य, एकल प्रदर्शन में प्रयुक्त, दाया तथा बायां दोनों मिलाकर भी तबला कहा जाता है।
  —संगीतार्णव संगीत कोश — डॉ. सुनन्दा पाठक

- ❖ एक प्रकार का ढोल।
  —हरियाणवी हिन्दी कोश — डॉ. जय नारायण कौशिक

4. **क्रियात्मकः**—क्रिया रूप में किया हुआ।
   —मानक विशाल हिन्दी कोश — सूर्य नारायण उपाध्याय

(1) क्रिया सम्बन्धी
(2) क्रिया या कार्यरूप में परिणत हुआ जो सचमुच करके दिखलाया जाये—

—नालन्दा विशाल शब्द सागर — श्री नवल जी

5. **वादनः**—संगीत वाद्य बजाना
   —मानक विशाल हिन्दी कोश — सूर्य नारायण उपाध्याय

(1) बाजा बजाना
(2) बाजा

—नालन्दा विशाल शब्द सागर — श्री नवल जी

6. **सैद्धान्तिकः**—सिद्धांतज्ञ, सिद्धान्त—सम्बन्धी, सिद्धान्त जानने वाला व्यक्ति
   —मानक विशाल हिन्दी कोश — सूर्य नारायण उपाध्याय

- ❖ सत्य सम्बन्धी, तात्विक, सिद्धान्त सम्बन्धी, तत्ववाद, सिद्धान्तवादी,
  —मानक पर्यायवाची कोश — प्रो. हरिवंश तरूण

- ❖ सिद्धान्त का ज्ञाता या पंडित, तान्त्रिक, सिद्धान्त का सिद्धान्त सम्बन्धी, जो सिद्धान्त के आधार पर हो,

—ब्रज भाषा सूर कोश – प्रेमनरायण टंडन

7. **शैलीः—**चाल, ढंग, पद्धति, परिपाटी, प्रणाली, रीति, विधि, तरीका तर्ज
—मानक पर्यायवाची कोश – प्रो. हरिवंश तरूण

❖ किसी काम को करने का ढंग, कार्य करने की रीति या पद्धति, कला, साहित्य आदि की रचना, अभिव्यक्ति की रीति, अभिव्यक्ति का कौशल
—मानक विशाल हिन्दी कोश – सूर्य नारायण उपाध्याय

प्रस्तावित शोध का महत्व

इसके अन्तर्गत निहित सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक पक्षों को प्रकाश में लाये जाने पर आधारित होगा किसी भी शोध प्रबन्ध, पुस्तकों का प्रकाशन इस दिशा में नहीं हुआ है। अतः यह शोध प्रबन्ध एक नवीन दिशा को प्रतिपादित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का महत्व शिक्षण संस्थाओं, शोधकर्त्ताओं तथा विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य करेगा, जिससे **"ख्याल गायन एवं तबला संगत"** के विभिन्न क्रियात्मक एवं सौन्दर्यात्मक पक्ष भी ज्ञान वर्धन हेतु महत्वपूर्ण होंगे।

शोध की आवष्यकता

❖ ख्याल गायन एवं तबला संगति एक दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों गायन—वादन शैलियों के क्रियात्मक, सैद्धान्तिक एवं सामंजस्यात्मक स्वरूप को उजागर करने क आवष्यकता है।

❖ विलम्बित ख्याल के साथ होने वाली तबला संगति को विभिन्न तालों एवं क्रियात्मक पक्षों (प्रत्येक मात्रा में सौन्दर्यात्मक बोलों, भराव एवं चमत्कारिक अंतिम बोलों) के माध्यम से स्पष्ट करने की आवष्यकता है। मध्य लय प्रधानख्याल के साथ निर्वाहित होने वाली तालों की विविधता के अनुसार उसमें निहित मुखड़े एवं तिहाईयों को प्रकाश में लाने की आवष्यकता है। द्रुत ख्याल एवं तबला संगति का तालमेल अत्यन्त चमत्कारिक, सुरूचिपूर्ण तथा सौन्दर्यात्मक होता है। इस गायन—वादन समन्वय में ताल—प्रकार छोटे बोलों, मुखड़ों, तिहाईयों को भी लिपिबद्ध करने की आवष्यकता है।

❖ कलाकार वर्ग के ख्याल एवं तबला संगति के विभिन्न कलात्मक पक्षों के समक्ष लाने की आवष्यकता है जिसमें गायन एवं तबला संगत के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न सौन्दर्यात्मक तत्वों (मंच प्रस्तुति, अभ्यास क्रम, रेडियो एवं दूरदर्शन पर होने वाले कार्यक्रमों में निर्वाहित) को भी प्रकाश में लाने क आवष्यकता है।

❖ ख्याल एवं तबला संगति के निर्वाहित हो रहे विद्यालयीन स्तरों को भी प्रकाश में लाने की आवष्यकता है।

❖ ख्याल गायन की ध्वन्यांकित सामग्री (रेडिया, सी.डी., कैसेट) में निर्वाहित तबला संगति को सुनने के पष्चात् ताल लिपिबद्ध करने की आवष्यकता है।

अध्ययन के उद्देष्य :–

- ❖ ख्याल गायन के ऐतिहासिक पक्षों को खोजना।
- ❖ ख्याल गायन के विविध क्रियात्मक स्वरूपों को उजागर करना।
- ❖ तबला वादन के ऐतिहासिक पक्षों को खोजना।
- ❖ तबला वादन के विविध क्रियात्मक स्वरूपों को उजागर करना।
- ❖ फर्रूखाबाद घराने के विभिन्न कलाकारों को खोज कर संगत एवं ताल प्रधान कलात्मकता को प्रकाश में लाना।
- ❖ ख्याल गायन एवं तबला संगति के समन्वयात्मक स्वरूप को उजागर करना।
- ❖ विलम्बित, मध्य एवं द्रुत ख्याल गायन में तबला वादन के विभिन्न सौन्दर्यात्मक पक्षों (जैसे– मुखड़े, मोहरे, छोटी–छोटी तिहाई युक्त बोलों) को प्रकाश में लाना।
- ❖ मुद्रित ध्वन्यांकित सामग्री (सी.डी. कैसेट, रिकार्ड्स, रेडियो, टी.वी.) द्वारा तबला संगत सुनकर विभिन्न ताल पक्षीय विशेषताओं को ताल लिपिबद्ध करना।
- ❖ फर्रूखाबाद घराने के कलाकारों द्वारा दिये गये साक्षात्कार के आधार पर तबला संगति के विविध सैद्धान्तिक एवंक्रियात्मक तत्वों को प्रकाश में लाना।
- ❖ पूर्व में दृष्य–श्रव्य ध्वन्याकिंत सामग्री का अध्ययन करके विभिन्न विशेषताओं का अन्वेषण करना।

विषय परिसीमांकनः–कार्य एवं समय सीमा को देखते हुये शोध प्रबन्ध को तबला संगत के संदर्भ में केवल फर्रूखाबाद घराने तक ही परिसीमित कर दिया जाएगा।

कार्य विधि एवं उपकरणः–प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु व्याख्यात्मक एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों जैसे संगीत नाटक अकादमी दिल्ली से, दयालबाग़ पुस्तकालय आदि से सामग्री एकत्रित की जायेगी, पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा भी जानकारी प्राप्त की जायेगी। विभिन्न विद्वानों एवं कलाकारों का साक्षात्कार करने हेतु टेपरिकार्डर, कैसेट्स कैमरा, सी.डी., ध्वन्यांकन सामग्री आदि जैसे उपकरणों तथा शोध उपकरणों के अन्तर्गत साक्षात्कार एवं प्रष्नावली जैसे शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

शोध प्रबन्ध के अध्यायों का प्रस्तावित विभाजनः

भूमिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय, समस्या का उद्भव, अध्ययन का औचित्य, सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, विषय कथन, विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देष्य, अध्ययन का महत्व, विषय परिसीमांकन, अध्ययन की कार्यप्रणाली, अध्ययन के उपकरण।

द्वितीय अध्याय :

(1) ख्याल गायन का ऐतिहासिक एवंक्रियात्मक पक्ष

(2) तबला वादन का ऐतिहासिक एवंक्रियात्मक पक्ष

तृतीय अध्याय :

ख्याल गायन एवं तबला संगत के विभिन्न सैद्धान्तिक पक्षः

(i) विलम्बित ख्याल एवं तबला संगत
(ii) मध्य ख्याल एवं तबला संगत
(iii) द्रुत ख्याल एवं तबला संगत

चतुर्थ अध्यायः

ख्याल गायन एवं तबला संगत के विभिन्न क्रियात्मक पक्षः

(i) विलम्बित ख्याल एवं तबला संगत
(ii) मध्य ख्याल एवं तबला संगत
(iii) द्रुत ख्याल एवं तबला संगत

पंचम अध्यायः

ख्याल गायन एवं तबला संगत का सैद्धान्तिक एवंक्रियात्मक पक्षों का विष्लेषण

षष्ठम् अध्यायः

मुद्रित/ध्वन्यांकित/दृष्य–श्रव्य सामग्री प्रधान ख्याल गायन एवं तबला संगत की रचनाओं का स्वर–ताल लिपिबद्ध संकलन

निष्कर्षः

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, रमेश, दिल्ली घराने में संगीत का योगदान, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली– 2011
2. बम्बन, डा. महेन्द्र प्रसाद, अवनद्य वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चंडीगढ़, 2008
3. खण्डे, डा. कलाश्री, मध्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की विकास यात्रा, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1995
4. चौधरी, विमलाकान्त राय, भारतीय संगीत कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ बी–45–47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली, 1975
5. मिश्रा, डॉ. अरूण, उत्तर भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूर्टर, नई दिल्ली, 2002
6. उपाध्याय, सूर्यनारायण, मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2005

पत्र–पत्रिकायें

1. संगीत कला विहार जनवरी, 2013 : डॉ. जयदेव सिंह, ख्याल और उसका विकास